श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय, भोपाल

सत्र - 2021-22

परियोजना कार्य - प्रेरणास्पद व्यक्तित्व पर रपट

महादेवी वर्मा

विषय - व्यक्तित्व विकास

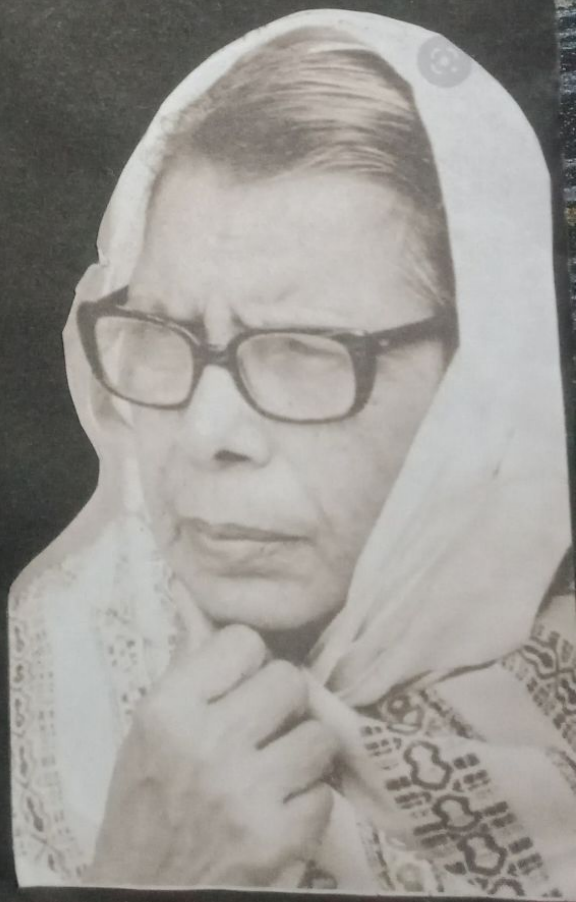

TOPIC

DATE

सी सत्य साई महिला महाविद्यालय (म. प्र.) भोपाल

सत्र - 2021-22

परियोजना कार्य - प्रेरणास्पद व्यक्तित्व पर रपट

विषय - व्यक्तित्व विकास

नाम - ईशा मलैया
बी. एससी. प्रथम वर्ष

प्रस्तुतकर्ता
ईशा मलैया
बी. एससी. प्रथम वर्ष

निर्देशक

डॉ. अनीता तिवारी मेम

शपथ पत्र

ईशा मलैया पुत्री श्री गोप साहब मलैया कक्षा बी. सी. प्रथम वर्ष की छात्रा हूँ। मेरे द्वारा यह घोषित किया जाता है व्यक्तित्व विकास विषयक परियोजना कार्य के अंतर्गत प्रेरणास्पद व्यक्तित्व के रूप में महादेवी वर्मा पर अपनी रपट दिनांक 2 मार्च से 16 मार्च 2022 तक प्रतिदिन उपस्थित होकर श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय,भोपाल में पूर्ण की जो कि पूर्णतः सत्य व मौलिक है

नाम – ईशा
मलैया

Esha Malaiya

शिक्षक निर्देशक का प्रमाण-पत्र

गत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता है कि कु. ईशा मलैया ने
त्व विकास के अंतर्गत प्रेरणादायक व्यक्तित्व पर आधारित
रियोजना कार्य रपट मेरे मार्गदर्शन में अत्यंत रुचि एवं श्रम के
यार की। उन्होंने कुछ अंशों में महादेवी साहित्य को पढ़ा था और
प्रभावित थीं तथा महादेवी वर्मा के जीवन परिचय को लेकर
सु थीं। उनकी इस जिज्ञासा को देखते हुए उन्हें महादेवी साहित्य
ध्ध करवाया। नियमित चर्चाओं के माध्यम से अपनी क्षमता
ार महादेवी साहित्य को जानने की उन्होंने कोशिश की तथा यह
तैयार की। यह रपट कु. ईशा मलैया का मौलिक कार्य है।

शिक्षक निर्देशक

विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय भोपाल

संस्था द्वारा प्रमाण पत्र

णित किया जाता है कि कु. ईशा मलैया बी.एससी. प्रथम
व्यक्तित्व विकास विषय पर आधारित परियोजना
के अंतर्गत महादेवी वर्मा के प्रेरणास्पद व्यक्तित्व पर श्री
साई महिला महाविद्यालय भोपाल में दिनांक 2 मार्च
मार्च 2022 तक उपस्थित रहकर अपनी रपट प्रस्तुत

सील एवं हस्ताक्षर

12/4/22

प्राचार्या
श्री सत्यसाई महिला महाविद्यालय
भोपाल (म.प्र.)

आभार पत्र

रणीय सायं वंदनीय पूज्य गुरुदेव के श्री चरणों में कोटि-कोटि प्रणाम। सर्वप्रथम मैं अपने
ना के प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करना चाहती हूँ, जिन्होंने सर्वदा मुझे अध्ययन
ताएं प्रदान कीं। मैं श्री सत्य साई महिला महाविद्यालय,भोपाल की हिंदी विभागाध्यक्ष डॉ.
चौहान मैडम, सहायक प्राध्यापक डॉ. मनीषा त्रिपाठी मैडम, सहायक प्राध्यापक डॉ.अनुराधा
न मेरी निर्देशक डॉ.अनीता तिवारी मैडम की बहुत आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे परियोजना
प्रेरित किया तथा मार्गदर्शन दिया।
ॉ. अनुपमा चौहान मैडम का भी विशेष आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने इस परियोजना
संपन्न करने हेतु मेरी मदद की तथा महादेवी वर्मा पर आधारित सामग्री उपलब्ध करवाई।
त में मैं उन सभी व्यक्तियों के लिए अपना हार्दिक आभार व्यक्त करती हूँ जिनके प्रत्यक्ष
यक्ष सहयोग के अभाव में प्रस्तुत परियोजना कार्य को यह रूप दे पाना दु: साध्य होता।

ईशा मलैया
बी.एससी.
प्रथम वर्ष

महादेवी वर्मा

TOPIC

DATE

विषय सूची

अध्याय - 1

विषय परिचय
महाविद्यालय स्तर पर किया गया कार्य
व्यक्तित्व परिचय एवं साहित्य समीक्षा
सीखने का उद्देश्य

अध्याय - 2

प्रसिद्ध व्यक्तित्व से सम्बंधित स्कैन सामग्री का विवरण

अध्याय - 3

निष्कर्ष
परियोजना कार्य में आने वाली कठिनाइयाँ
सन्दर्भसूची

TOPIC

DATE

विषय :- व्यक्तित्व विकास पर आधारित परियोजना कार्य के अन्तर्गत मैंने मुझे प्रेरणा देने वाले व्यक्तित्व के रूप सुप्रसिद्ध हिन्दी साहित्यकार एवं चिन्तक श्रीमती महादेवी वर्मा व्यक्तित्व को चुना है जिन्हें पढ़कर मैंने अपने भीतर अनेक ारात्मक परिवर्तनो का अनुभव किया है इन अनुभवों ने मेरे क्तित्व को एक नई ऊर्जा से भरकर जीवन को नई दिशा दी है।

यय का चुनाव एंव महाविद्यालय में किया गया कार्य :-

ालयीन एंव महाविधालयीन शिक्षा के अन्तर्गत मैंने महादेवी की अनेक रचनाओं को पढ़ा जो मुझे निरन्तर प्रभावित करती हैं।

अतः इस विषय को परियोजना के रूप में चयनित करते हुए महाविधालय के पुस्तकालय एंव हिन्दी विभाग के विभागीय कालय से महादेवी वर्मा के साहित्य को पढ़ा तथा महादेवी वर्मा व्यक्तित्व एंव कृतित्व पर आधारित अनेक पुस्तकों का अध्ययन ा और वर्षों से ही जिन रचनाओं से मैं प्रभावित होती आई उन रचनाओं का गहन अध्ययन करने का अवसर मुझे इस योजना के अन्तिगत प्राप्त हुआ। इस अध्ययन के द्वारा मैंने ा कि महिलाशक्तिकरण, पर्यावरण एंव प्रकृति प्रेम, अध्यात्म, न्न सामाजिक समस्याएँ, रेखा चित्रों द्वारा अमर कर दिए गए ् सम्बन्ध एंव विशिष्ट व्यक्तित्व तथा हिन्दी भाषा की विशेषता दे अनेक गुणों से महादेवी वर्मा का व्यक्तित्व एंव कृतित्व ओत-है। उन्होंने न केवल लिखा या चिन्तन किया बल्कि उनका जीवन एक उदाहरण है कि उन्होंने इन सबको अपने जीवन का एक अंग कर कार्य में भी परिणत किया।

अतः इस परियोजना कार्य के माध्यम से ~~मैं महादेवी वर्मा~~ ~~माध्यम से~~ मैं महादेवी वर्मा के प्रेरणादायक व्यक्तित्व को प्रस्तुत करना चाहती हूँ।

Oddy Stationery

TOPIC DATE

जीवन परिचय

महादेवी का जन्म शिक्षित और समृध्द साहित्यिक परिवेश में फर्रुखाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। उनके बाबा उर्दू, फारसी के विद्वान और दीवान-ए-गालिब के दीवाने थे। पिता अंग्रेजी में निष्णात और अंग्रेजी कविता के अध्येता, नाना हिन्दी संस्कृत के विद्वान और संस्कृत में काव्य लिखने के अभ्यासी, माँ सगुणोपासक रामचरित मानस, विनय पत्रिका, सूर और मीरा आदि के पदों का सस्वर पाठ कर अपने ठाकुर जी को रिझातीं। ऐसे काव्य क्षेत्र में बालिका महादेवी में साहित्यिक बीज का अंकुरण स्वाभाविक था। वे तुक मिलाने लगीं और कवि-गुरु के निर्देशन में समस्यापूर्ति करने लगी।

आरंभिक शिक्षा इन्दौर में पूरी कर आगे की पढ़ाई के लिए वे प्रयाग आ गईं छात्रावास में सुभद्रा कुमारी चौहान के सान्निध्य में उन्होंने राष्ट्रीय संघर्ष के जागरण का स्वर सुना। इस स्वर को अपनी कविताओं में पिरोया, बापू के दर्शन किए और राष्ट्रीय भावनाओं से स्फूर्ति पूरित कविताओं के अतिरिक्त रुद्र वाणी के प्रतीक बापू की भी काव्यमय अभ्यर्थना की। ...ीं रहते हुए उन्हें श्रीयुत श्रीधर पाठक हरिऔध और रत्नाकर ...े आदि को सुनने का संयोग मिला। उनका 'यह अमर ...लेयान बेला है, मरण इसको कहो मत' जैसा अभिधात्मक ...र सूक्ष्म होने लगा।

...ाहित्यिक परिचय :- महादेवी जी साहित्य और संगीत के अतिरिक्त चित्रकला में भी रूचि रखती थीं। सर्वप्रथम ...की रचनाएं 'चांद' नामक पत्रिका में प्रकाशित हुईं। ये 'चान्द' ...त्रिका की सम्पादिका भी रहीं। इनकी साहित्य साधना के लिए ...रत सरकार ने इन्हें पद्म भूषण की उपाधि से अलंकृत किया। ...ईं सेकसरिया तथा 'मंगला प्रसाद पुरस्कारों से भी सम्मानित किया गया।

Oddy Stationery

गया। तथा इसी वर्ष अथवा वर्ष 1983 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान द्वारा इन्हें एक लाख रूपये का भारत-भारती पुरस्कार दिया गया तथा इसी वर्ष काव्य ग्रन्थ यामा पर इन्हे 'भारतीय ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्राप्त हुआ। ये जीवन पर्यंत प्रयाग में ही रहकर साहित्य साधना करती रही। आधुनिक काव्य के साथ साज-श्रृंगार में इनका अविस्मरणीय योगदान है। इनके काव्य में उपस्थित विरह-वेदना अपनी भावनात्मक गहनता के लिए अमूल्य मानी जाती है। इसी कारण इन्हे आधुनिक युग की मीरा भी कहा जाता है करूणा और भावुकता इनके काव्य की पहचान है। 11 सितम्बर, 1987 को यह महान कवयित्री पंचतत्व में विलीन हो गई।

रचनाएं - महादेवी जी ने पद्य एवं गद्य दोनों ही विधाओं पर समान अधिकार से अपनी लेखनी चलाई। इनकी कृतियाँ निम्नलिखित है।

1. नीहार - यह महादेवी जी का प्रथम काव्य संग्रह है। उनके इस काव्य में 47 भावात्मक गीत संकलित हैं और वेदना का स्वर मुखर हुआ है।
2. रश्मि :- इस काव्य संग्रह में आत्मा - परमात्मा के मधुर सम्बन्धों पर आधारित 35 कविताएं संकलित है।
3. नीरजा :- इस संकलन में 58 गीत संकलित है, जिनमें से अधिकांश विरह-वेदना से परिपूर्ण है। कुछ गीतों में प्रकृति का मनोरम चित्र अंकित किया गया है।
4. सान्ध्य गीत :- 58 गीतों के इस संग्रह में परमात्मा से मिलन का चित्रण किया गया है।
5. दीपशिखा :- इसमें रहस्य - भावना प्रधान 51 गीतों को संगृहित किया गया है।

महादेवी जी की कविताएँ

यामा (सजिल्द)

महादेवी वर्मा

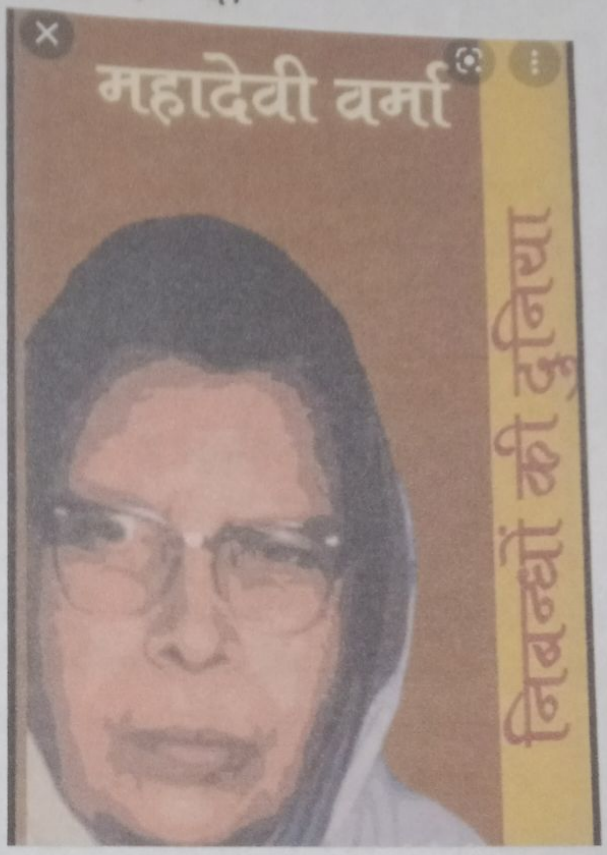

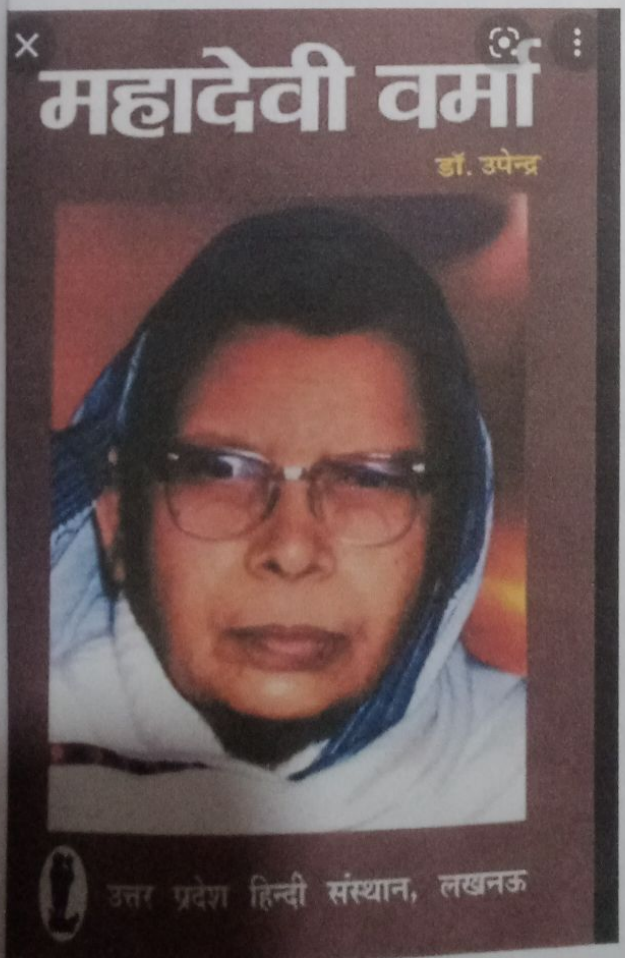

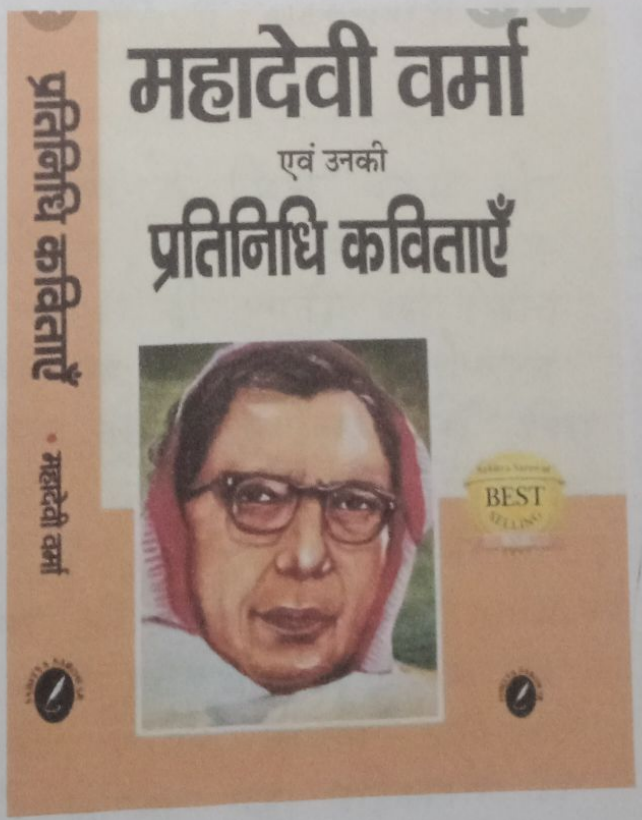

TOPIC

DATE

भाषा शैली - महादेवी जी ने अपने गीतों में स्निग्ध और सरल तत्सम प्रधान खड़ी बोली का प्रयोग किया है। इनकी रचनाओं में उपमा, श्लेष, मानवीकरण आदि अलंकारों की छटा देखने को मिलती है। इन्होंने भावात्मक शैली का प्रयोग किया, जो सांकेतिक एवं लाक्षणिक है। इनकी शैली में लाक्षणिक प्रयोग एवं व्यंजना के प्रयोग के कारण अस्पष्टता व दुरूहता दिखाई देती है।

हिन्दी साहित्य में स्थान :- महादेवी वर्मा की कविताओं में नारी हृदय की कोमलता और सरलता का बड़ा ही मार्मिक चित्रण हुआ है। इनकी कविताओं में रहस्यवाद की झलक देखने को मिलती है। हिन्दी साहित्य में पद्य लेखन के साथ-साथ अपने गद्य लेखन द्वारा हिन्दी भाषा को सजाने संवारने तथा अर्थगाम्भीर्य प्रदान करने का जो प्रयत्न इन्होंने किया है, वह प्रशंसा के योग्य है। हिन्दी के रहस्यवादी कवियों में इनका स्थान सर्वोपरि है।

शिक्षा :- महादेवी जी की शिक्षा इन्दौर में मिशन स्कूल से प्रारम्भ हुई; साथ ही संस्कृत, संगीत तथा चित्रकला की शिक्षा अध्यापकों द्वारा घर पर ही दी जाती रही। बीच में विवाह होने पर शिक्षा स्थगित कर दी गई। विवाहोपरान्त महादेवी जी ने 1919 में क्रॉस्थवेट कॉलेज इलाहाबाद में प्रवेश लिया और कॉलेज के छात्रावास में रहने लगी। 1921 में महादेवी जी ने आठवीं कक्षा में प्रांत भर में प्रथम स्थान प्राप्त किया। यहीं पर उन्होंने अपने काव्य जीवन की शुरुआत की। वे सात वर्ष की अवस्था से ही कविता लिखने लगी थीं और 1925 तक जब उन्होंने मैट्रिक की परिक्षा उत्तीर्ण की, वे एक सफल कवियित्री के रूप में प्रसिद्ध हो चुकी थीं। विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में

Oddy Stationery

आपकी कविताओं प्रकाशित होने लगा था। कॉलेज में सुभद्रा कुमारी चौहान के साथ उनकी घनिष्ठ मित्रता हो गई। सुभद्रा कुमारी चौहान महादेवी जी का हाथ पकड़ कर सखियों के बीच में ले जाती और कहतीं – "सुनो, ये कविता भी लिखती हैं।" 1932 में जब उन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम. ए. पास किया तब तक उनके दो कविता संग्रह 'नीहार' तथा 'रश्मि' प्रकाशित हो चुके थे।

काव्य साधना :— महादेवी वर्मा छायावादी युग की प्रसिद्ध कवियत्री हैं। छायावाद आधुनिक काव्य की एक शैली होती है जिसके अन्तर्गत विविध सौन्दर्य पूर्ण अंगों पर चेतन सत्ता का आरोप कर उनका मानवीकरण किया जाता है। इस प्रकार इस में अनुभूति और सौन्दर्य चेतना की अभिव्यक्ति को प्रमुख स्थान दिया जाता है। महादेवी जी के काव्य में यह दोनों विशेषताएँ हैं। अन्तर मात्र इतना है कि जहां छायावाद के अन्य कवियों ने प्रकृति में उल्लास का अनुभव किया है वहीं इसके उलट महादेवी जी ने वेदना का अनुभव किया है। महादेवी वर्मा ने अपने काव्य में कल्पना के आधार पर प्रकृति का मानवीकरण कर उसे एक विशेष भाव स्मृति और गीत काव्य से विभूषित किया है इसलिए महादेवी जी की रचनाओं में छायावाद की विभिन्न भावगत और कलागत विशेषताएं मिलती हैं।

काव्य भाव - महादेवी जी के काव्य की मूल भावना वेदना भाव है लेकिन जीवन में वेदना-भाव की उपज दो कारणों से होती है।

जीवन में किसी अभाव के कारण

दूसरों के कष्टों से प्रभावित होने के कारण

DATE

TOPIC

महादेवी वर्मा का वैवाहिक जीवन :- जब महादेवी वर्मा मात्र 11 वर्ष की थीं तभी उनका विवाह डॉक्टर स्वरूप नारायण वर्मा से कर दिया गया था। किन्तु विधि को कुछ और ही मन्जूर था। महादेवी जी का वैवाहिक जीवन सुख में नहीं रहा। इनका जीवन असीमित अकांक्षाओं और महान आशाओं के प्रति फलित से करने परिपूर्ण था। इसलिए उन्होनें साहित्य सेवा के लिए अपना जीवन अर्पित कर दिया।

महादेवी वर्मा को मिले पुरस्कार एवं सम्मान - महादेवी वर्मा को अनेक पुरस्कारों से नवाजा गया। इनको हर क्षेत्र में पुरस्कार मिले।

1. साहित्य अकादमी फेलोशिप (1979)
2. ज्ञानपीठ पुरस्कार (1982)
3. ~~पद्मभू~~ पद्मभूषण पुरस्कार (1956)
4. पद्म विभूषण (1988)

मृत्यु - महादेवी वर्मा का निधन 11 सितम्बर 1987 को प्रयाग (वर्तमान प्रयागराज) में हुआ। महादेवी वर्मा हिन्दी भाषा की एक विख्यात कवयित्री थीं। स्वतंत्रता सेनानी और महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ने वाली महान महिला थीं।

Oddy Stationery

TOPIC

DATE

एकत्रित सामग्री का विवरण :—

महादेवी वर्मा

जन्म	26 मार्च 1907 फर्रूखाबाद, संयुक्त प्रान्त आगरा व अवध, ब्रिटिश राज
मृत्यु	11 सितम्बर 1987 (आ 80) प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत
व्यवसाय	उपन्यासकार, कवयित्री, लघुकथा लेखिका
राष्ट्रीयता	भारतीय
उच्च शिक्षा	संस्कृत, प्रयागराज विश्वविद्यालय से
अवधि काल	बीसवीं शताब्दी
साहित्यिक आन्दोलन उल्लेखनीय कृतियाँ	छायावाद यामा, रश्मि, नीरजा, दीपशिखा, सांध्यगीत मेरा परिवार पथ के साथी
उल्लेखनीय सम्मान	1956: पद्म भूषण 1982: ज्ञानपीठ पुरस्कार 1988: पद्म विभूषण
जीवनसाथी	डॉ. स्वरूप नारायण वर्मा

Oddy Stationery

TOPIC

DATE

साहित्य समीक्षा :— महादेवी वर्मा का साहित्य पढ़ते हुए मेरे भीतर एक नया दृष्टिकोण ने जन्म लिया। इस नवीन दृष्टि ने मुझे अपनी परिस्थितियों परिवेश, जिम्मेदारियों को सकारात्मक रूप से ग्रहण करने की क्षमता प्रदान की हमारे वैचारिक व्यक्तित्व से किस प्रकार हमारे बाहरी व्यक्तित्व का आभा-मण्डल निर्मित होता है। यह मैंने महादेवी वर्मा की कृतियों से जाना, समझा और ग्रहण किया। विशेष तौर से उनके गद्य साहित्य को पढ़ते हुए मैंने प्रकृति, पर्यावरण एवं सम्बन्धों के प्रति संवेदना व्यक्ति, वस्तु, घटना आदि को अपनी रागात्मक परिधि में लाकर उनसे तादात्म्य का अनुभव स्थापित किया। महादेवी वर्मा अपनी इस स्मृति यात्रा को तीर्थयात्रा के समकक्ष स्थान देती हैं। महादेवी वर्मा कहती हैं — "अतीत में मिले खोये व्यक्तियों या पशु-पक्षियों का स्मरण करते समय कभी-कभी मेरे इतने आँसू गिरे हैं कि लिखा हुआ कागज गीला हो जाने के कारण नष्ट हो गया है और कभी-कभी हँसी ने मुझे इतना अस्थिर कर दिया है कि लिखावट टेढ़ी-मेढ़ी हो गई है।

मेरे संस्मरणों में मेरे आँसू और हँसी के ही नहीं, अनेक तीव्र आवेगों के गहरे चिन्ह अलग-अलग पहचाने जा सकते हैं।

पाठकों के अनुभव से ज्ञात होता है कि उनकी भाव-संसृति में मेरा संवेग-प्रत्यावर्तन ही अवतार लेता है।

मेरे विचार में जीवन के विविध सौन्दर्य या वैषम्य की तीव्र अनुभूति ही आत्मा का पर्वस्नान है। साहित्य की जो विधा इस मनुष्य के लिए सुलभ करती है, वह सार्थक है।"

महादेवी की कृति "अतीत के चलचित्र" में रामा, भाभी, गिसा, लछमा, सबला आदि रेखाचित्र तथा 'स्मृति की रेखाएँ' में भगतिन, चीनीफेरी वाला, ठाकुरी बाबा, बिबिया, गुगिया, आदि रेखाचित्र हिन्दी साहित्य ही नहीं पूरे भारतीय साहित्य में अनुपम हैं।

Oddy Stationery

TOPIC

DATE

यह सच है कि एक सच्चे कलाकार की सहानुभूति हमेशा पीड़ित का पक्ष लेती है, और नारी भी समाज का एक पीड़ित अंग है। भला महादेवी इससे अछूती कैसे रह पातीं? फिर महादेवी के समय में तो स्त्रियों की दशा बड़ी शोचनीय थी। नारी के सम्बन्ध में उनकी विद्रोही सामाजिक चेतना यत्र-तत्र जैसे- 'बिन्दा', 'मुन्नू की माई', सबिया इत्यादि रेखाचित्रों के माध्यम से प्रखरता से व्यक्त हुई है। अपने जीवनकाल में प्रारम्भ से ही वे सामान्य नारी की स्थिति पर विचार करती रहीं फलतः विधवाओं, परित्यक्ताओं, वेश्याओं, की समस्याओं को उन्होंने अपनी रचना का माध्यम बनाया। महादेवी बखूबी समझती थीं कि वास्तव में सामाजिक विषमता का एक कारण - हमारा अर्थ प्रधान समाज है, जिसमें (आज की तुलना में बहुत अधिक) अर्थोपार्जन के सभी साधन पुरुष के हाथों में है, अतः जब तक आर्थिक स्वतंत्रता स्त्री को नहीं प्राप्त होती तब उसे पुरुष के अत्याचारों का शिकार होना ही पड़ेगा। 'मुन्नू की माई' नामक रेखाचित्र की ये पंक्तियाँ कुछ इस ओर संकेत भी करती हैं —
"मेरे मन में एक ऐसी पाठशाला खोलने की इच्छा उत्पन्न हुई, जिसमें स्त्रियाँ कातना-बुनना सीख सकें।"
उपर्युक्त के आलोक में यह निःसन्देह कहा जा सकता है कि महादेवी के साहित्य में समाज के दीन-हीन उपेक्षित वर्ग के दुःख-दैन्यपूर्ण जीवन की अभिव्यक्ति रेखाचित्र के माध्यम से ही हुई है। परिवार-समाज में विभिन्न रूपों में नारी की स्थिति और उनके उत्पीड़न उसकी परवशता का जैसा सटीक और मार्मिक चित्रण इनमें हुआ है वैसा हिन्दी साहित्य में कम ही दृष्टिगोचर होता है। दूसरा इन रेखाचित्रों के माध्यम से महादेवी का अपना जीवन, स्वभाव, प्रेरणा-स्रोत, विचारधारा भी स्पष्ट होते जाते हैं। इस प्रकार 'अतीत के चलचित्र' और स्मृति की रेखाएं में संकलित रचनाएँ उस करुणामय प्रेम की दिग्दर्शन कराती हैं जो व्यक्ति और समाज दोनों को सम्बल प्रदान करती रहेंगी।

Oddy Stationery

TOPIC

DATE

स्मृति ० महादेवी का व्यक्तित्व, जीवन एवं उनका काव्य बहुत कुछ उनकी दार्शनिक मान्यताओं पर आधारित हैं। उन्होने दार्शनिक विचार को केवल अपने मस्तिष्क का आभूषण करते हुए आत्मानुभूति का अंग बनाया है जिससे वे उनके जीवन की विभिन्न दिशाओं एवं गतिविधियों के प्रेरक एवं नियामक बन गये हैं। कदाचित बहुत कम ऐसे साहित्यकार होंगे जिन्होंने अपने जीवन और काव्य को अक्षरश: अपने विचारों के अनुरूप ढाला हो, किन्तु महादेवी के लिए निस्संकोच कहा जा सकता है कि उन्होंने अपनी भावना और क्रिया में सदा अपने विचारों को ही उर सकती हूँ।

महादेवी वर्मा ने 'संस्कृति' के अन्तर्गत 'करूणा का सन्देश वाहक', संस्कृति का प्रश्न, संस्कृति और प्रकृति परिवेश ; 'राष्ट्र और भाषा' के अन्तर्गत हमारा देश और राष्ट्र भाषा, भाषा का प्रश्न; 'साहित्य' के अन्तर्गत साहित्यकारों की आस्था, साहित्य और साहित्यकार और 'समाज' के अन्तर्गत समाज और व्यक्ति, हमारी समस्याएँ, आधुनिक नारी, नारीत्व का अभीशाप, जीनें की कला ; 'विविध' के अन्तर्गत सामाजिक समस्या, हमारे वैज्ञानिक युग की समस्याएँ, हिन्दी पत्र जगत एक दृष्टि, सुई दो रानी, डोरा दो रानी आदि वैविध्यपूर्ण एवं गहन वैचारिकता से युक्त गद्य साहित्य बहुमुखी दिशाओं की ओर संकेत करता है तथा महादेवी के बहुआयामी व्यक्तित्व को हमारे समक्ष उपस्थित करता है।

इस गद्य साहित्य के आधार पर कहा जा सकता है कि-

अतीत और वर्तमान, शाश्वत और सामयिक में महादेवी कोई विरोध नहीं मानतीं उसी प्रकार वे आस्था और विज्ञान में किसी विरोध को नहीं स्वीकारतीं। प्राय: यह कहा जाता है कि आज के विज्ञान ने हमारी आस्थाओं को खंडित कर दिया है, पर महादेवी के विचार से ऐसा नहीं है। आज का विज्ञान हमारी आस्थाओं को खंडित नही करता अपितु वह उन्हें और अधिक व्यापक आधार प्रदान करता हैं।

Oddy Stationery

TOPIC

DATE

"आज के व्यक्ति को अपनी आस्था में विराट मानव का कर्तव्य सँभालना पड़ता है। विज्ञान ने भू-खंडों को एक-दूसरे के इतना निकट पहुँचा दिया है कि यह कर्तव्य हर व्यक्ति को प्राप्त हो गया है। ..... जिन युगों में भू-खण्ड दूसरे से परिचित नहीं था, उनमें भी मनुष्य ने वसुधा को कुटुम्ब के रूप में स्वीकार कर अनदेखे सहयात्रियों के प्रति आस्था व्यक्त की है। तब आज के मंगल-ग्रह खोजी वैज्ञानिक युग को आस्था का अभाव क्यों हो?"

महादेवी जी के साहित्य की समग्रता :-

"महादेवी जी आदर्श एवं यथार्थ में समन्वय-स्थापन चाहती हैं।" वह यथार्थ जिसके पास आदर्श एवं ~~यथार्थ~~ का स्पन्दन नहीं केवल शवमात्र है और वह आदर्श जिसके पास यथार्थ का शरीर नहीं प्रेतमात्र है"

महादेवी जी की जीवन दृष्टि अनेक स्थितियों के सामन्जस्य की दृष्टि है। वे इस दृष्टि से सामन्जस्य के माध्यम से जीवन में समस्त आयामों को समन्वित कर लेना चाहती हैं समन्वय वादी चेतना के इस विकास के फलस्वरूप उनके व्यक्तित्व में जीवन की समग्रता और व्यापकता का भाव उपन्यस्त हुआ है। उनके इस समन्वय में आदर्शमूलक चेतना भी स्पष्ट लक्षित होती है और वे सम्पूर्ण मानव की परिकल्पना करती हुई दिखाई पड़ती हैं।

इस दृष्टि से यह कहा जा सकता है कि समन्वय और सामन्जस्य उनके जीवन के मूलाधार हैं। साहित्य केवल कल्पना की उपज या मानसिक निर्माण नहीं अपितु उसका आधार मनुष्य का यथार्थ जीवन है जीवन की यथार्थता ही कलाकार के अन्तः करण में प्रविष्ट हो जाती है। और वहाँ से वह एक नवीन छटा लेकर वाह्य जगत में अवतरित होता है। यही

Oddy Stationery

TOPIC

DATE

बाह्यात्मक प्रति गद्य अथवा पद्य के रूप में प्रवाहित होती हुई मानवा मात्र का सिंचन करती है।

वंशानुगत आध्यात्मिक संस्कार ने महादेवी के व्यक्तित्व को परम्परागत धार्मिक रूढ़ियों से निकालकर एक दार्शनिक एवं वैज्ञानिक चिन्तन प्रदान किया। जिससे आध्यात्म का आन्तरिक बल उभर कर सामने आ खड़ा हो जाता है। और व्यक्तित्व में धर्म भीरुता नही आ पाती। तथा परिवेश विद्रोही बनाने में सहायक सिद्ध हुए। महादेवी जी ने अपने परिवेश और परिस्थितियों के समक्ष अपने को कभी समर्पित नही किया। लक्ष्यप्राप्ति के लिए उनका दृढ़ संकल्प और अपने चुने हुए मार्ग पर अबाध अविराम यात्रा ने मुझे भी लक्ष्य चरण एवं उसके प्रति संकल्पवान और निष्ठावान होने की प्रेरणा दी।

महादेवी वर्मा अपने युग की प्रमुख चिन्तनशील साहित्यकार रही है उनके गद्य साहित्य का अन्य अत्यंत सबल पक्ष उनके आलोचक का है। अपने समीक्षात्मक निबंधो में उन्होंने साहित्य को जीवन की गतिशीलता से जोड़कर उसके विविध रूपों और दायित्वों की गम्भीर विवेचना की है। मानव-जीवन की प्रगति द्वन्द्वों के सामंजस्य में निहित है, इसकी विवेचना उनके लेखन में पग-पग पर मिलती है। समन्वय, तारतम्य, सन्तुलन सामंजस्य जैसे शब्दों का मानव-विकास के समस्त भावों और रूपो में प्रतिफलन वे अनिवार्य मानती हैं- मानसिक जगत् का एवं वस्तुजगत् व्यष्टि और समष्टि बुद्धि और भावना आदर्श और यथार्थ, जड़ और चेतन, कर्म, ज्ञान और भक्ति आदि में संयोजन के बिना न मानव-जीवन ही विकसित हो सकता है और न साहित्य ही। वे कहती है- "जीवन की गतिशीलता में विश्वास करना अनिवार्य हो उठता है.... जीवन को गति देने के दो ही प्रकार है- एक तो बाह्य अनुशासनों का सहारा देकर उसे चलाना और दूसरे अन्तर्जगत् में ऐसी स्फूर्ति उत्पन्न कर देना जिससे सांमजस्यपूर्ण गतिशीलता अनिवार्य हो उठे"

S-8

Oddy Stationery

महादेवी द्वारा बनाए गए चित्र

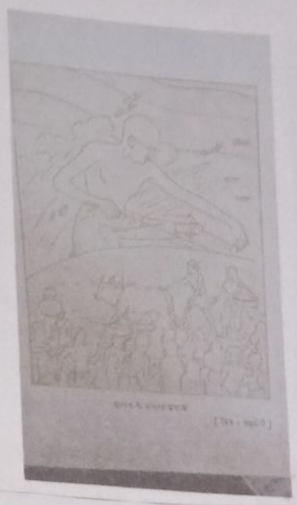

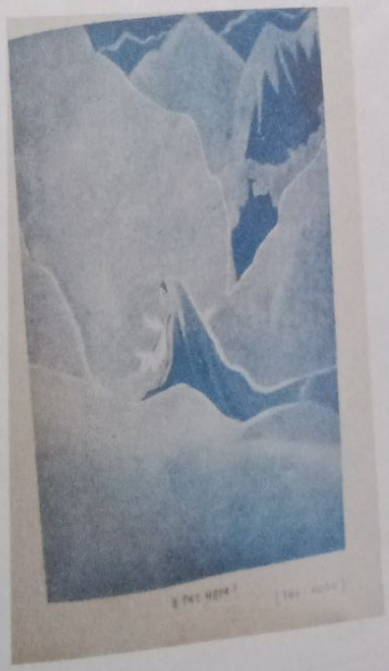

TOPIC

सीखने का उद्देश्य :-

DATE

महादेवी वर्मा का साहित्य काफी विस्तृत, गहन और ज्ञान का भण्डार है। जिसे पूरा पढ़ने समझने और अपने जीवन में क्रियान्वित करने में मुझे पूरा जीवन लगेगा पर इस आयु में उन्हें जितना भी पढ़ा और जाना उसमें मेरे व्यक्तित्व विकास की अनेक दिशाओं को खोल दिया उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व निश्चित ही प्रेरणा का अगाध समुद्र है। मैंने उस समुद्र में डुबकी लगा कर व्यक्तित्व विकास के कुछ रत्नों को प्राप्त किया -------

1. शिक्षा एवं ज्ञान प्राप्ति की जिज्ञासा।
2. लक्ष्य का निर्धारण।
3. लक्ष्य प्राप्ति के लिए दृढ़ निश्चय।
4. लक्ष्य प्राप्ति के मार्ग पर निरन्तर आगे बढ़ने की संकल्प शक्ति।
5. अपने विचारों को अभिव्यक्त करने की रचनात्मक शक्ति।
6. प्रत्येक परिस्थिति से संघर्ष की सकारात्मक शक्ति।
7. पर्यावरण प्रेम।
8. प्राणी मात्र के प्रति संवेदना, करुणा व प्रेम।
9. राष्ट्र के प्रति अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन।

महादेवी का प्रेरणास्पद व्यक्तित्व

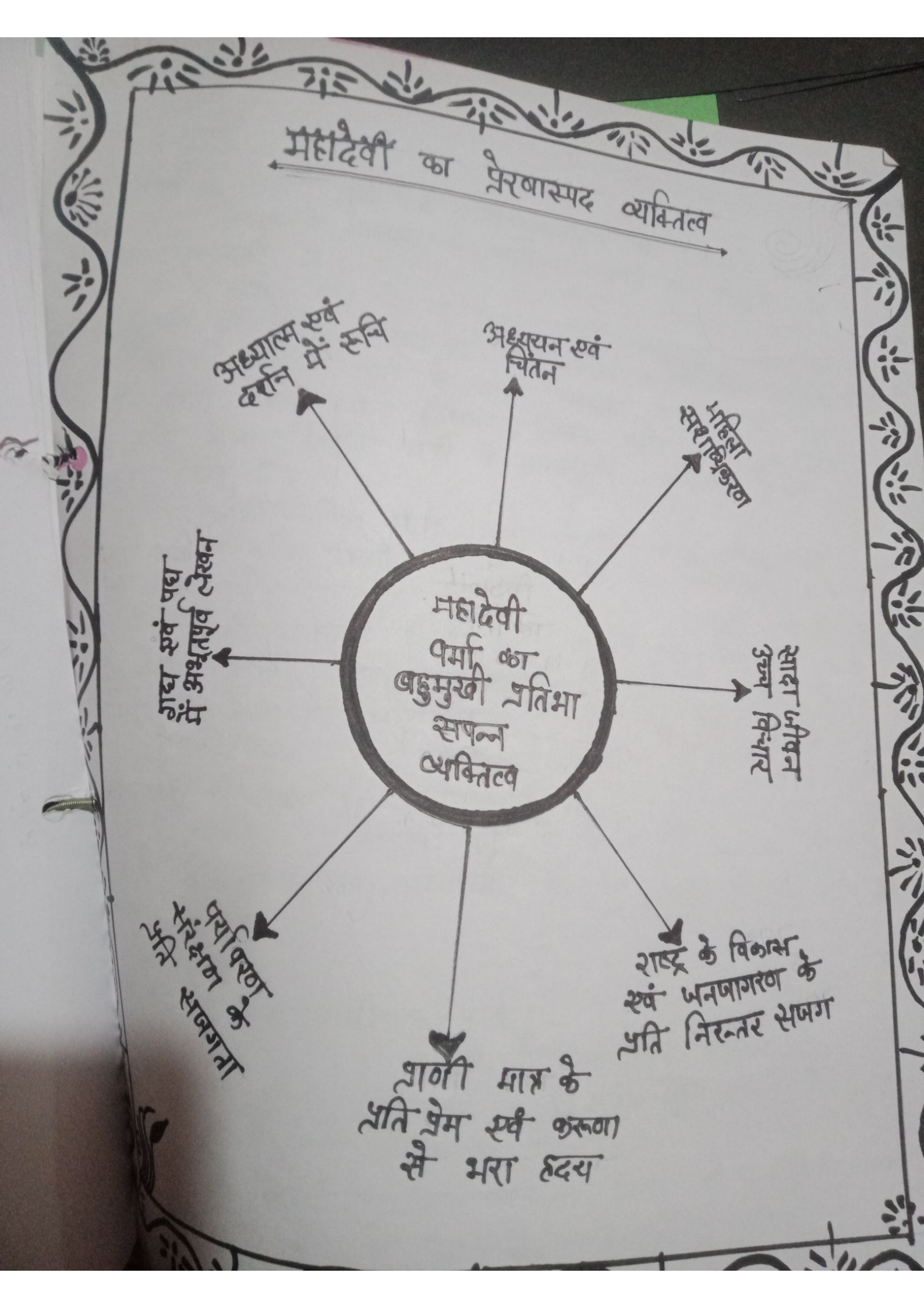

TOPIC

DATE

निष्कर्ष :- महादेवी वर्मा एक ऐसी रचनाकार थीं जिन्होंने अपने लेखक के माध्यम से साहित्य - जगत को बहुमूल्य और अमर रचनाएँ दी।

उनके लेखन ने न केवल प्रकृति, अध्यात्म, दर्शन एवं रहस्यवाद को बल्कि जनजागरण एवं समाज सुधार का उद्घोष भी है जो महादेवी वर्मा के मात्र भावुक कवयित्री ही सिद्ध नही करता बल्कि परम बुद्धिमान, चिंतक और सामाजिक हित के प्रति सजग विदुषि नारी के गुरुगंभीर व्यक्तित्व को भी प्रकट करता है।

उनकी जीवन शैली उनका वैचारिक स्तर और ऊर्जा युवा शक्ति और उसमें भी नारी शक्ति का मार्गदर्शन करने में समर्थ है।

उनकी रचनाएँ हिन्दी साहित्य में प्रमुख स्थान रखती है, ऐसी कवयित्री भारत के इतिहास में हमेशा सम्मान के योग्य एवं प्रेरणास्पद रहगी।

परियोजना का दायरा :-

महादेवी वर्मा के लेखन के माध्यम से साहित्य और समाज का अध्ययन एवं प्रेरणादायक बिन्दुओं का अन्वेषण।

परियोजना में आने वाली कठिनाई :-

1. साहित्य संचयन।
2. साहित्यिक शब्दों के अर्थ समझना।

महादेवी जी का साहित्य अत्यन्त विशाल है। सीमित समय में उनका पूर्ण रूप से अध्ययन करना और समझना।

Oddy Stationery

TOPIC

DATE

सन्दर्भ :-

1.) महादेवी का रचना - संसार / प्रो. लक्ष्मण सिंह बिष्ट बटरोही / हिन्दी विभाग कुमाऊँ विश्वविद्यालय नैनीताल / स. 2005

2.) अर्वाचीन हिन्दी काव्य / डॉ. विनय दुबे / म.प्र हिन्दी अकादमी रवीन्द्रनाथ ठाकुर मार्ग, बानगंगा भोपाल / स. 2003

3.)

3.) महादेवी नया मूल्यांकन / डा. गणपतिचन्द गुप्त / स. 1969

4.) महादेवी साहित्य-1/ ~~ओम~~ ओंकार शरद / सेतु प्रकाशन, 1804, तलैया, झाँसी / सन- 1969

5. महादेवी साहित्य - 2 / ओंकार शरद / सेतु प्रकाशन, 1804, तलैया, झाँसी / सन- ~~1969~~ 1970

6. महादेवी साहित्य - 3 / ओंकार शरद / सेतु प्रकाशन, 1804, तलैया, झाँसी / सन - 1970